LUA ④ Sovereignty — grp-B-4 17

Q. लॉस्की के अनुसार ~~संप्रभुता संप्रभुता~~ सम्प्रभुता की व्याख्या —

राज्य का अध्ययन के लिए सामाजिक-राजनीतिक दर्शन में सम्प्रभुता का बहुत अधिक महत्व है। राज्य के चार तत्वों का उल्लेख किया जाता है— जनसंख्या, निश्चित भू-भाग, संगठित सरकार और सम्प्रभुता। विचारकों की दृष्टि में राज्य के लिए सम्प्रभुता का वही महत्व है जो व्यक्ति के जीवन के लिए प्राणों का होता है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सम्प्रभुता अंग्रेजी भाषा के 'Sovereignty' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है जो लैटिन भाषा के 'Superanus' शब्द से व्युत्पन्न है। इसका अर्थ होता है सर्वोच्च शक्ति से है। इसके अनुसार एक सम्प्रभु राज्य वह है जो किसी अन्य राज्य की अधीनता में नहीं होता और अपने नियन्त्रित भू-भाग में सर्वोच्च होता है। अर्थात सम्प्रभुता के कारण ही राज्य आन्तरिक दृष्टि से सर्वोच्च एवं बाह्य-दृष्टि से स्वतंत्र माना जाता है।

इंग्लैंड के 20वीं शताब्दी के राजनीतिक विचारक लॉस्की का ~~सम्प्र~~ संप्रभुता के सम्बंध में विचार बहुलवादी विचार

कहलाता है उन्होंने अपने ग्रन्थ "The problem of Sovereignty" 'Authority in the Modern State', 'Foundation of Sovereignty' में बहुलवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते हैं। बहुलवाद के विकास में अनेक तत्वों ने कार्य किया है। ज्ञान-विज्ञान की प्रगति ने पृथ्वी के एक हिस्से से दूसरे हिस्से की दूरी कम कर विभिन्न राज्यों को एक-दूसरे के काफी निकट ला दिया। उनका कथन है कि समाज के ढाँचे को पूर्ण होने के लिए उसे संघात्मक होना चाहिए। उनका मत है कि सम्प्रभु संप्रभुता का विचार व्यक्ति के विकास में बाधक है व्यक्ति न तो साधन है और न ही राज्य साध्य है। व्यक्ति अपनी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं
...र्थिक अनेक प्रकार के समुदाय
...ता है और मानव के
विकास के लिए यह
... कि मानव जीवन से
सम्बंधित समुदायों
हस्तक्षेप से
...र कार्य करने का

अवसर मिले। क्योंकि राज्य व्यक्ति की प्रगति तथा आत्म संतुष्टि का साधन मात्र है तथा व्यक्ति का विकास बहुमुखी होता है। व्यक्ति को अपने विवेक के अनुसार भक्ति निर्धारित करने का अधिकार होना चाहिए। जो केवल बहुलवादी व्यवस्था में ही सम्भव है।" उन्होंने कहा है कि "मैं केवल उसी राज्य के प्रति राज्य भक्ति और राज्य के प्रति भक्ति और निष्ठा रखता हूँ उसी के आदेशों का पालन करता हूँ जिस राज्य में मेरा नैतिक विकास होता है हमारा प्रथम कर्तव्य अपने अंतःकरण के प्रति सच्चा रहना है।

लॉस्की का मानना है कि राज्य भी अन्य समुदायों की तरह एक समुदाय है तथा इसके स्वरूप तथा अन्य समुदाय के स्वरूप में कोई आधारभूत अन्तर नहीं है अतः व्यक्ति के हित में किसी एक समुदाय या राज्य की इच्छा अन्तिम नहीं हो सकती और सामान्य इच्छा जैसा कोई शक्ति नहीं हो सकती अतः व्यक्ति द्वारा बनाये गये विभिन्न समुदाय व्यक्ति की अधिकाधिक सेवा तभी कर

सकते है जब राज्य इनकी जाति विधियों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करे और सीमित क्षेत्रों से संतोष करे।

इस प्रकार लॉस्की के बहुलवादी मत के अनुसार सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना एकात्मक प्रभुता सम्पन्न राज्य में नही अपितु बहुलवादी व्यवस्था में ही सम्भव है। बहुलवादी व्यवस्था विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। लॉस्की के अनुसार वस्तुतः सम्प्रभुता का सिद्धांत ही संघर्षो एवं युद्धो का जनक है। तथा विश्व शांति के लिए संप्रभुता का त्याग एक आवश्यकता है, लॉस्की का मानना है कि संप्रभुता असीमित सम्प्रभुता का सिद्धांत मानवता के हितो से मेल नही खाता और जिस प्रकार राजाओ के दैवी अधिकार समाप्त हो गए वैसे ही राज्य की सम्प्रभुता भी समाप्त हो जायेगी।
लॉस्की अन्य बहुलवादियों की तरह यह मानता है कि राज्य विधि का नही बल्कि विधि राज्य का निर्माण करती है। राज्य का कार्य मुख्यतया जीवन के राजनीतिक पहलू से सम्बन्धित है और

बहुलवादियों के अनुसार अपने ही क्षेत्र तक सीमित रहना चाहिए जिससे अन्य समुदाय स्वतंत्र रूप से व्यक्ति के जीवन का सभी पहलुओं का श्रेष्ठ विकास कर सके।

लॉस्की संप्रभुता के असमर्यादित सिद्धांत को ऐतिहासिक दृष्टि से भी गलत मानते हैं। उनका कहना है कि इतिहास इस बात का प्रमाण है कि राज्य की सम्प्रभुता पर सदैव अंकुश रहा है। इतिहास में एक भी शासक ऐसा नहीं है जो असमर्यादित एवं निरंकुश शक्ति से सम्पन्न रहा हो तथा कथित निरंकुश शासकों को भी देश की प्रथाओं, परम्पराओं, धार्मिक, नियमों एवं लोक मत का सम्मान करना पड़ा है। राज्य कभी भी असीमित शक्ति से सम्पन्न नहीं रहे हैं।

लॉस्की के अनुसार ऑस्टिन का सिद्धांत अव्यवहारिक है इसकी व्यवहारिकता आंतरिक शक्ति गुटों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के विकास के कारण कम हो गई है उनका कहना है कि अतीत में इस सिद्धांत में राज्य को धर्म पदाधिकारियों के

से चंगुल से निकालने में अवश्य योगदान किया। किन्तु वर्तमान समय में इसका महत्व कम हो चुका है

आलोचना —

लॉस्की की सम्प्रभुता सम्बन्धी विचारों की काफी आलोचना हुई है तथा आलोचकों द्वारा कहा गया कि बहुलवाद का तार्किक निष्कर्ष अराजकता है इससे समाज में कानून विहीन की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। आलोचकों ने लॉस्की की सम्प्रभुता विचार के विरुध आक्षेप लगाये हैं

(1) लॉस्की का संप्रभुता विचार समाज में अव्यवस्था एवं अराजकता को जन्म देता है यदि लॉस्की के तर्क को स्वीकार कर लिया जाये तो यह व्यवस्था एवं प्रगति के स्थान पर सर्वोच्चता का दावा करने वाले अनेक समुदायों को जन्म दे कर समाज को विखण्डित कर देगा।

(2) लॉस्की कहता है कि संप्रभुता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता में सामंजस्य कठिन है। किन्तु वास्तव में राष्ट्रीयवाद एवं सच्चा अन्तर्राष्ट्रीय साथ साथ चल सकते है।

(3) संप्रभुता को विकेन्द्रीय विकेन्द्रीत या विभक्त करने का अर्थ उसे नष्ट कर देना है यदि राज्य संप्रभुता नही है तो वह विभिन्न समुदायों के परम्परा परम्पारिक सम्बंध को स्थिर नही कर सकता।

(4) वर्तमान समय में लोक कल्याण -कारी राज्य की अवधारणा ने राज्य की गतिविधियो एवं उसके नियंत्रण में अत्याधिक वृद्धि कर दी है जिससे लॉस्की का विचार खण्डित हो जाता है।

- इस सम्बंध में आशीर्वादम ने बहुलवाद की आलोचना करते हुए लिखा है " एक ऐसे सिद्धांत के रूप में जो संप्रभुता के परम्परागत विचारों की गलतियों को ठीक करता है और जिसकी कमियों को ठीक करता है। बहुलवाद एक महत्वपूर्ण सिद्धांत

परन्तु जब वह सम्प्रभुता के सिद्धांत को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करता है तब यदि अर्थ नहीं तो स्वतन्त्रता अवश्य हो जाता है। कहा जाता है कि कुल वह अन्तर्विरोधों से भरा भरा हुआ है। वे सम्प्रभुता को सामने के द्वार से बाहर निकाल कर पीछे के द्वार से ले आते है।

इन आपेक्षों के बावजूद भी लास्की के विचार महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान है। उसने आधुनिक समाज में सामुहिक जीवन की महत्ता पर बल दिया। तथा निरंकुश राज्य के विरुध लोकतांत्रिक एवं विकेन्द्रीत व्यवस्था का समर्थन किया। उसने मानव समुदायों की स्वयत: व्यक्ति की स्वतन्त्रता और व्यक्तित्व की की गरिमा में विश्वास किया।

—— X ——